वर्षः 3, अंकः 4
मई-अक्टूबर, 2021
मई, 2021 में प्रकाशित।

कविता बिहान

सृजन चिंतन का नया पक्ष

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे, मारे जाएँगे

कटघरे में खड़े कर दिये जाएँगे
जो विरोध में बोलेंगे
जो सच-सच बोलेंगे, मारे जाएँगे

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा कि किसी की कमीज हो
'उनकी' कमीज से ज्यादा सफ़ेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जाएँगे

धकेल दिये जाएँगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं
जो गुन नहीं गाएँगे, मारे जाएँगे

धर्म की ध्वजा उठाए जो नहीं जाएँगे जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिये जाएँगे

सबसे बड़ा अपराध है इस समय निहत्थे और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जाएँगे।

राजेश जोशी–'मारे जाएँगे'

प्रधान संपादक
नलिन रंजन सिंह

संपादक
ज्ञान प्रकाश चौबे

इस अंक में

संपादकीय/5

लंबी कविता

बचपन की कहानी के तीन खो गये पात्रों की तलाश में भटकते हुए/**राजेश जोशी**/9

राजेश जोशी पर कविताएँ

राजेश जोशी का जादू/**सुभाष राय**/15

प्रधानमंत्री ने यूँ ही फ़ोन नहीं किया होगा राजेश जोशी को/**वसंत सकरगाए**/17

तिरेसठ के राजेश जोशी/**प्रेमशंकर शुक्ल**/19

राजेश जोशी को पढ़ते हुए/**प्रतिभा गोटीवाले**/21

राजेश जोशी : बहुत करीब से

क़िस्सों के शहर में एक गप्पी रहता है/**मनोज कुलकर्णी**/22

राजेश जोशी : मेरे अभिभावक/**वसंत सकरगाए**/25

साक्षात्कार

फ्री वर्स एक खास लय है जिसे हर कवि अपने–अपने स्तर पर प्राप्त करता है

ज्ञान प्रकाश चौबे/28

काग़ज का कोई विकल्प नहीं होता और स्क्रीन पर पढ़ने की स्मृति लंबी नहीं होती

संजय राय/47

राजेश जोशी : कविताओं की दुनिया

कविता की नयी राह/**मदन कश्यप**/53

कविता की एक देसी परंपरा/**ए. अरविन्दाक्षन**/57

समय की अद्यतनता और समाज की अधुनातनता का कोलाज/**हरीश चन्द्र पाण्डे**/72

कविता की वापसी का दौर और कविता अर्थात् राजेश जोशी की कविता की ज़मीन

जीवन सिंह/77

विमर्श को आंदोलन की ओर मोड़ने का प्रयास करती–राजेश जोशी की कविता

नीलेश रघुवंशी/90

वैतनिक

रोड,
9/2,

एक शायर जिसका नाम वली दकनी था/**महेश आलोक**/94
कुछ नहीं है जीवन से ज़्यादा सुंदर, जीवन से ज़्यादा प्यारा, जीवन की तरह अमर
अरुण होता/100
एक कविता के भीतर कितना रहता है एक कवि : प्रतिबद्धता और राजेश जोशी का लेखन
अनिल मिश्र/115
समकालीन हिन्दी कविता और राजेश जोशी का कवि–कर्म/**जितेन्द्र श्रीवास्तव**/124
अच्छी कविता और राजेश जोशी की कविताएँ/**विजय कुमार भारती**/142
आसमान के सफे पर लिखे चाँद की तरह/**कुमार मुकुल**/147
समय की पोटली से अपने समय की शिनाख्त का काव्यबोध/**शशिभूषण द्विवेदी**/150
राजेश जोशी की अज्ञात जादुई दुनिया/**सुभाष राय**/160
पानी की भाषा में एक नदी/**विशाल श्रीवास्तव**/167
हिंदी कविता का कप्तान : राजेश जोशी/**निशांत**/178
जीवन के राग की कविता/**गौरी त्रिपाठी**/187
समय की आलोचनात्मक शिनाख़्त से रचनात्मक प्रतिरोध गढ़ता काव्य/**संजय राय**/193
राजेश जोशी की कविता और मेहनतकश–हाशिए के लोग/**संजय रणखांबे**/223
ज़िद की कविताएँ/**मणि मोहन मेहता**/238
चाँद की वर्तनी पर एक बेतरतीब दृष्टि/**प्रियम अंकित**/244
परिवर्तनकामी चेतना और मनुष्य की मुक्ति का हलफनामा/**शिवदत्ता वावलकर**/252
कविता में प्रतिरोध रचते कवि का हलफनामा/**अल्पना सिंह**/261
जनता के नुमाइंदे हैं राजेश जोशी/**अनिल मिश्र 'गुरू जी'**/266

राजेश जोशी : गद्य विधाओं की दुनिया

राजेश जोशी के नाटक/**राकेश**/270
क्यूँ वो अलाव बुझ गए, वे किस्से क्या हुए/**वैभव सिंह**/277
राजेश जोशी की कहानियाँ : एक विश्लेषण/**बसंत त्रिपाठी**/283
कपिल का पेड़ : आत्मीयता, संरक्षण और प्रेम की तलाश/**एकता मंडल**/288
राजेश जोशी की कहानियों का संसार/**राहुल शर्मा**/292
सार्थक सृजनात्मकता का प्रतिबिंब : वह हँसी बहुत कुछ कहती थी/**क्षमा मिश्रा**/298

जीवन के राग की कविता

गौरी त्रिपाठी

कविता की दुनिया हमारे मनोभाव की दुनिया होती है। जब हमारे अनुभव की दूरी कविता [illegible] खत्म सी हो जाती है तो मुझे लगता है कि ऐसे कवि हमारे हृदय के बहुत नजदीक हो जाते हैं और राजेश जोशी की कविता को हम संवेदनाओं के इसी पक्ष के लिए रखते हैं। समकालीन कविता के महत्वपूर्ण कवि राजेश जोशी को हम बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं या यूँ कहें कि समकालीन कविता उनके बगैर मुकम्मल नहीं होती है।

"गलत है सरासर यह सोचना कि जो विजयी है वही श्रेष्ठ है
बर्बरों ने ही अक्सर जीता है सभ्यताओं को
उलटी घूम रही हैं घड़ी की सूईयाँ
सदी का अंत कुछ पिछली सदियों को ढो रहा है
ऐसा होता तो नहीं है पर हो रहा है।"[1]

हमारे समय का सच है यह कि जिसे सफलता प्राप्त है जो विजयी है वही बेहतर है लेकिन [illegible] का सच क्या होता है इसे राजेश जोशी जब तब हमें बताते रहते हैं। राजेश जोशी [illegible] के कवि हैं। प्रतिरोध के स्वर को अपनी कविताओं में वे धीरे–धीरे प्रस्तुत करते रहते हैं। [illegible] उनकी कविताएँ साहित्य कला और मानवीय सरोकारों से गहरे अर्थों में जुड़ी हुई हैं। वे [illegible] की सबसे कमजोर आवाज को कविता में ले आते हैं। हर वक्त उनकी कविता सत्ता से [illegible] दिखाई पड़ती है—

"धकेल दिये जाएँगे कला की दुनिया से बाहर, जो चारण नहीं
जो गुन नही गायेंगे मारे जाएँगे
धर्म की ध्वजा उठाए नहीं जाएँगे जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिए जाएँगे।"[2]

राजेश जोशी की कविता में सबसे ज्यादा चिंता समाज, व्यक्ति और मानवीय मूल्यों के लिए